PRINT ISSN : 2395-6011
ONLINE ISSN : 2395-602X

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH IN SCIENCE & TECHNOLOGY

VOLUME 7, ISSUE 5, SEPTEMBER-OCTOBER-2020

PEER REVIEWED AND REFEREED
SCIENTIFIC INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Web Site : www.ijsrst.com

Email : editor@ijsrst.com

International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Print ISSN: 2395-6011 Online ISSN : 2395-602X

Volume 7, Issue 5, September-October-2020

International Peer Reviewed, Open Access Journal
Bimonthly Publication

Published By

Technoscience Academy

	Nurmiaty, Samsu Arif, Sukmawati, Rahmad D., Andi Ridwan, Miss Rahma Yassin, Yunarti	
31	**The Effect of Current Ratio and Debt to Asset Ratio on Net Profit Margin and Stock Prices: A Study of Basic Industry and Chemicals Companies** Sudirman, Muhammad Wahyuddin Abdullah, Muhammad Obie	282-294
32	**An Experimental Study on The Influence of Nano Silica on the Strength and Durability Characteristics of Self Compacting Concrete** K. Satish Kumar Reddy, D. Mohammed Rafi, A.B.S. Dadapeer	295-302
33	**Dalit Movement in India** Dr. Deepak Kumar	303-306
34	**Study of Iron, Inorganic Phosphate, Sodium, Potassium in Serum and its Effects on Reproduction of the Experimental Fish Clarias Batrachus** Dr. Amit Kumar	307-314
35	**Projective Motion, Projective Curvature Collineation and Infinitesimal Projective Transformation in a Finsler Space Equipped with Semi-Symmetric Connection** S.K. Tiwari, Ved Mani	315-325
36	**Chemo-Therapeutic Management of An Acute Abscess in a Male Asian Elephant (Elephas maximus)** Anitta PL, Girish U, Chris Seymour	326-330
37	**Impact of Hindu - Muslim Disputes on Adolescence** Prema Kumari	331-336
38	**A Review on Content Delivery Network for Efficient Cloud Storage** Jagdish Belsare, Prof. Pragati Patil	337-341
39	**Numerical Study of the Heat Transfer Characteristics of Convection in Vertical Channel through FEM Simulation** P. V. Janardhana Reddy	342-349
40	**The Basic Solution to The Environmental Problem - Sanskrit Education** Dr. Dinesh Kumar Yadav	350-355
41	**A Review COVID 19 : A Zoonotic Disease and a Relentless Widespread Global Pandemic** Dr. PreetiJeet Bansal	356-367
42	**Momentum and Emotional Development** Dr. Sunil Kumar Sharma	368-371
43	**Modern Perspectives Value Peace Education : Teaching Role** Dr. Aarti Sharma	372-376
44	**Community Pharmacy Practice – A Review** Dr. D. S. Ghotekar, Vishal N. Kushare	377-383

International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

पर्यावरण समस्या का मूल समाधान–संस्कृतशिक्षा

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायकाचाय, शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Volume 7, Issue 5
Page Number : 350-355

Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 01 Sep 2020
Published : 20 Sep 2020

शोधालेखसार –

आज की युवा पीढ़ी को स्वाभाविक रूप से बाल्यकाल से ही पर्यावरण प्रेमी बनाने की आवश्यकता है और यह कार्य सर्वाधिक प्रभावपूर्ण ढंग से करने के लिए आवश्यकता है संस्कृत साहित्य के अध्ययन की। कुछ आक्रान्ताओं के आक्रमण के पश्चात् हमारी संस्कृति का मूलाधार संस्कृत साहित्य को सुनियोजित ढंग से हमारे समाज व युवा पीढ़ी से दूर कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति और लोकतांत्रिक सरकारों के आने के बाद भी इसकी उपेक्षा बदस्तूर जारी रही और निरन्तर चल रही है।

मुख्यशब्द– पर्यावरण, प्रकृति, वर्तमान समस्यायें, भूमि, पर्वत, नदी, वायु, प्रदूषण, संस्कृत शास्त्र।

'मा कुरु वत्स। जघन्याचरणम्
निगदति मनुजं पर्यावरणम्।।
सर्ग–विरोधि निसर्ग–दूषणम्
कथयति सततं पर्यावरणम्।।

यह तथ्य निर्विवाद है कि प्राकृतिक पर्यावरण का मानव समृद्धि ही नहीं अपितु जीवमात्र के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान है। प्रकृति के आलिंगन में ही समुचित विकास की कल्पना की जा सकती है। प्राचीन काल में मानव पूर्ण रूप से प्रकृति पर आश्रित था। प्रकृति से ही उसे भोजन, अन्न, वस्त्र इत्यादि सुलभ थे। इसलिए मानव प्रकृति को देव रूप में पूजा करता था। जिसका प्रमाण हमारे शास्त्रों में उपलब्ध है–

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।। (अथर्ववेद– 12/1/12)

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शोधशौर्यम्

ISSN : 2581-6306

Website : http://shisrrj.com

: Editor-In-Chief :

Dr. Raj Kumar

: Impact Factor :
5.239

Peer Reviewed and Refereed International Journal

VOLUME 4, ISSUE 2, MARCH-APRIL-2021

SHODHSHAURYAM
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED RESEARCH JOURNAL

Email: editor@shisrrj.com

Publisher Address :

3 & 4, Sterling Plaza,
Indira Circle, 150 Feet Ring Road,
Rajkot-360005, Gujarat, India

शोधशौर्यम्

Shodhshauryam

International Scientific Refereed Research Journal

[Frequency: Bimonthly]

E-ISSN : 2581-6306

Volume 4, Issue 2, March-April-2021

Published By

Technoscience Academy

29	**भारतीय संगीत और नारी** डॉ. अनिल कुमार शर्मा	184-188
30	**Trends of Contract Labour System in India : Continuity and Change** Saurabh Kumar	189-195
31	**डयते कथमाकाशे? इति ग्रन्थस्य सामाजिकं वैशिष्ट्यम्** खोकन परामानिकः	196-201
32	**सतत विकास हेतु शिक्षाः एक अध्ययन** डॉ. शिवराज कुमार	202-206
33	**विशेष विद्यालयों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर मनो-सामाजिक कारकों के प्रभाव** डॉ. मुकुन्द मोहन पाण्डेय	207-213
34	**वर्णव्यवस्थाया: शैक्षिकनिहितार्थ:** डॉ. दिनेशकुमारयादव:	214-218

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

वर्णव्यवस्थाया: शैक्षिकनिहितार्थ:

डॉ. दिनेशकुमारयादव:
सहायकाचार्य:, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीय, संस्कृतविश्वविद्यालय:, नवदेहली

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 214-218
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 25 April 2021

भारतवर्षे वर्णव्यवस्थाया: प्रारम्भ: वैदिककालादेव मन्यते।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमारीद्बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।[1]

अत्र समाजस्य कल्पना पुरुषसरूपेण कृता वर्तते। अर्थात् मानवशरीरस्य अङ्गानामिव। यथा शरीरस्य अङ्गानि कार्यं कुर्वन्ति तथैव एतानि वर्णानि समाजे स्वकर्तव्यम् निर्वहन्ति। तेन सम्पूर्णसमाजस्य कार्यव्यवहार: सम्यक् प्रचलति। वर्णशब्दस्य निष्पत्ति: 'वृज वरणे' धातुना अभवत् । यस्यार्थोऽस्ति - वरणं चयनं वा। प्रारम्भिककाले वर्णव्यवस्थाया: आधार: कर्म एवासीत्, यस्य प्रमाणं मनुस्मृतौ विद्यते

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रौविद्येनज्ययासुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।।[2]

यजुर्वेदेऽपि चतुर्णां वर्णानां परिगणना तेषां कर्मानुगुणमेव कृता-

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भयो वैश्यं तपसे शूद्रम।[3]

ब्राह्मणस्य नाम मङ्गलयुक्त:, क्षत्रियस्य बलयुक्त:, वैश्यस्य धनसूचक:, शूद्रस्य च सेवासूचक: संबोधित: वर्तते। महाभारतेऽपि उक्तम्-

ब्राह्मणो जायमानो हि पृथिव्यामधिजायते ।
ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोशस्य गुप्तये।।
अतः पृथिव्या यन्तारं क्षत्रियं दण्डधारिणम्.
शूद्रो ह्येतान् परिचरेदिति ब्राह्मणानुशासनम्।।[4]

ब्रह्मजातारं ब्राह्मण: उक्तं नो चेद् तं ब्रह्म-मूढो एव कथ्यते। यथा-

अनुभूतिं विना मूढो वृथा ब्रह्मणि मोदते ।
प्रतिबिम्बितशाखाग्रफलास्वादनमोदवत् ॥[5]
तस्मादपि दीक्षितं राजन्यं वा वैश्यं वा ब्राह्मण।
इत्येव ब्रूयाद् ब्राह्मणो हि जायते यो यज्ञाज्जायते ।।[6]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ज्ञानशौर्यम्

ISSN : 2582-0095

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Volume 4, Issue 6, November-December-2021

: Editor-In-Chief :

Dr. Raj Kumar

GYANSHAURYAM

INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED RESEARCH JOURNAL

Website : http://gisrrj.com Email : editor@gisrrj.com

Publisher Address :
3 & 4, Sterling Plaza,
Indira Circle, 150 Feet Ring Road,
Rajkot-360005, Gujarat, India

ज्ञानशौर्यम्

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

Volume 4, Issue 6, November-December-2021

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2582-0095

Peer Reviewed and Refereed International Journal
Bimonthly Publication

Published By
Technoscience Academy

CONTENT

Sr. No	Article/Paper	Page No
1	युधिष्ठिरविजय महाकाव्य में वर्णित समाज के धार्मिक स्वरूप का अध्ययन डा0 संगीता अग्रवाल, विजय कुमार यादव	01-05
2	स्वतंत्र भारत में आतंकवाद एवं उग्रवाद की समस्याएँ: एक अध्ययन विशाल कुमार	06-11
3	**R. K. Laxman % The Uncommon Creator of Common Man** Dr. Sandhya Saxena	07-13
4	गीता में बुद्धियोग डा0 बी0बी0 त्रिपाठी, मंजीत कुमार वर्मा	14-16
5	पुराणों में गंगा का महत्त्व डा0.बी बी त्रिपाठी, गौरी	17-22
5	सोमनाथदाशविरचितस्य वंशीविनोदस्य आध्यात्मिकपक्षविचारः विलता वर्मन्	23-28
6	**Global Financial Crisis on Banking Sector and Economic Slowdown in India** Dr. Pankaj Yadav	29-42
7	डॉ सुभाषचन्द्र कुशवाहा के कथा -साहित्य में दलित-विमर्श रेशमा त्रिपाठी	43-49
8	वैदिक कालीन शिक्षा-पद्धति: एक विश्लेषण राजेश कुमार, डॉ० जगबीर सिंह	50-56
9	कठोपनिषद् व मुण्डकोपनिषद् में वैराग्य की विवेचना डॉ. सुमन	57-62
10	संस्कृतसाहित्ये स्त्रीविमर्शः Nayan Bala Das	63-68
11	भारत में जेल प्रशासन एवं जेल सुधार: एक विधिक अवलोकन सुनील कुमार मिश्रा, डा0 राजीव नयन सिंह	69-81
12	वेदों में वर्णित मंत्र द्रष्ट्री ऋषिकाओं का यथार्थ स्वरूप डॉ प्रियंका आर्या	82-87
13	पाठ्यचर्यायाः समस्याः जयपालः	88-91

Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

जनभाषा संस्कृतम्

डॉ. दिनेशकुमारयादवः
सहायकाचार्यः- शिक्षापीठम्, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय,संस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

शोधसारांशः-

सुरभारतीं कथं नो समधीत भारतीयाः।
दृग्वारिवारिणी का जननीं विना द्वितीया।।

"भाष्यते व्यक्त-वाग्रूपेणाभिव्यज्यते इति भाषा''। भाषा मानवानां कृते अनिवार्यसाधनं मन्यते। भाषायाः अभावे सम्पूर्णे संसारेऽन्धकारः एव स्यात्। भाषा मानवसभ्यतायाः संस्कृतेश्च विकासे महत्वपूर्णं योगदानं करोति। भाषायाः मातृभाषारूपं सर्वाधिकं प्रभावशाली भवति। भाषासु एका अन्या भाषा अपि भवति, यस्यां प्राचीनसंस्कृतिभण्डारः सुरक्षितः भवति। क्रमेऽस्मिन् भारतीयभाषासु संस्कृतभाषा विश्वसाहित्यस्य प्राचीनतमा भाषा वर्तते। विभिन्नैः प्रमाणैः संस्कृतभाषितभाषात्वेनासीदिति अवश्यं वक्तुं शक्यते। अस्माभिः सदैव भारतीयसंस्कृतेः संरक्षणाय परिवर्धनाय च भाषेयं बाल्यादेव तेषां व्यवहारे उपयोक्तुं शक्या। संस्कृतं जनभाषाकर्तुम् उपहुतिः, संस्कृतं पुनः जनभाषाकर्तुं मार्गः।

मुख्यशब्दाः- भाषा, सामाजिकजीवनं, मानवसभ्यता, संस्कृतिः, सभ्यता, संस्कृतं, जनभाषा, संस्कृतसमाराधकाः, वर्तमानस्थितिः, उपहुतिः।

Article Info
Volume 4 Issue 6
Page Number: 92-96

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Accepted : 01 Dec 2021
Published : 25 Dec 2021

भाषा- भाषा मानवानां कृते अनिवार्यसाधनं मन्यते। अस्याभावे मानवजीवनस्य विकासः प्रगतिश्चापूर्णा भवति। मानवस्य समस्तसामाजिकजीवनं भाषाऽऽधारितो वर्तते। भाषायाः अभावे सम्पूर्णे संसारेऽन्धकारः एव स्यात्। काव्यादर्शे उल्लिखितमस्ति –

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्वथा।
वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते।।
इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

आचार्यदण्डी:, काव्यादर्शः, प्रथमपरिच्छेदः- 3

अतः भाषा समाजसापेक्षवस्तु वर्तते। मानवजीवनेन सह तस्याः घनिष्टसम्बन्धः वर्तते। यदि भाषासदृशं ज्योतिः संसारे प्रदीप्तं न भवेत् तर्हि परितः अन्धकारः एव स्यात् । भाषाविषये **डॉ. रामबाबूसक्सेनामहोदयनामभिप्रायः** वर्तते-

"यैः ध्वनिचिह्नैः मानवः परस्परं विचारविनिमयं करोति सैव भाषा कथ्यते।"

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ज्ञानशौर्यम्

ISSN : 2582-0095

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Volume 5, Issue 2, March-April-2022

: Editor-In-Chief :

Dr. Raj Kumar

GYANSHAURYAM

INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED RESEARCH JOURNAL

Website : http://gisrrj.com Email : editor@gisrrj.com

Publisher Address :
3 & 4, Sterling Plaza,
Indira Circle, 150 Feet Ring Road,
Rajkot-360005, Gujarat, India

ज्ञानशौर्यम्

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

Volume 5, Issue 2, March-April-2022

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2582-0095

Peer Reviewed and Refereed International Journal
Bimonthly Publication

Published By
Technoscience Academy

10	**साहित्य का समाजशास्त्र और दलित आत्मकथाएँ** अतुल कुमार	57-60
11	**स्मृतिप्रामाण्यविचारः** डा.सुधांशुशेखरमहापात्रः	61-65
12	**Contribution And Role of Information Technology (IT) Sector in Indian Economy** Dr. Khalid Anwar	66-72
13	**भ्रष्टाचारसप्तशत्यां रसनिबन्धनम्** कमलिनीमहारणा	73-77
14	**पुस्तकालयों के विकास में अधिनियमों का योगदान** शीलू जौहरी	78-84
15	**तत्पुरुषसमासलक्षणं तद्भेदाश्च** कैलाश चन्द्र बुनकर	85-130
16	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: चुनौतियाँ और संभावनाएँ** डॉ. दिनेशकुमारयादवः	131-136

Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

(National Education Policy 2020: Challenges and Possibilitie)

डॉ. दिनेशकुमारयादव:

सहायकाचार्य:, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय, संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 131-136
Publication Issue :
March-April-2022
Article History
Accepted : 02 March 2022
Published : 20 March 2022

शोधसार-

करीब साढ़े तीन दशकों की लंबी प्रतीक्षा के बाद देश को नई शिक्षा नीति (NEP) की सौगात मिली है। इसे तैयार करने में जितने अधिक अंशभागियों का सहयोग मिला वह अपने आप में एक मिसाल है। यह कवायद देश में जीवंत लोकतंत्र का प्रतीक है। शुरुआती दस्तावेज तैयार करना और उन पर आए सुझावों का संकलन कर उसे नीति का रूप देना बिल्कुल भी आसान काम नहीं था, लेकिन प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री के नेतृत्व में इसे अंजाम दिया गया। आमूलचूल बदलावों वाली इस नीति को तैयार करने में पांच वर्षों तक जमीनी स्तर पर जो काम हुआ वह खासा चुनौतीपूर्ण था।

मौजूदा 10+2+3+2 ढांचे के स्थान पर 5+3+3+2 की मल्टी एंट्री और एग्जिट वाली नई रूपरेखा नवाचारी एवं महत्वाकांक्षी होने के साथ तमाम चुनौतियों से भी भरी है। कौशल मापन, व्यावसायिक शिक्षा, समानता, गुणवता, विभिन्न धाराओं की शिक्षा, स्थानीय एवं वैश्विक मिश्रण, समावेशी एवं द्विपक्षीय समझ, विश्लेषणात्मक समझ का विकास, बस्ते का हल्का बोझ, शिक्षा जोन, कम पाठ्यक्रम, अन्वेषण पर जोर, चर्चा, विमर्श, शोध एवं नवाचार पर ध्यान, कॉलेजों को स्वायत्तता और शुरुआती दौर में बेहतर पढ़ाई के लिए मातृभाषा में अध्ययन वास्तव में बहुत अच्छे विचार हैं।

भारत में एकसमान शैक्षणिक प्रणाली लागू करना बहुत ही मुश्किल काम है, ताकि प्रत्येक छात्र को एक जैसी शिक्षा और सुविधाएं मिल सकें। ऐसी स्थिति में एनईपी को लागू करना टेढ़ी खीर होगा। सबसे

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

PRINT ISSN : 2395-6011
ONLINE ISSN : 2395-602X

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH IN SCIENCE & TECHNOLOGY

VOLUME 9, ISSUE 6, NOVEMBER-DECEMBER-2022

PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL SCIENTIFIC RESEARCH JOURNAL

Web Site : www.ijsrst.com

Email : editor@ijsrst.com

International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Print ISSN: 2395-6011 Online ISSN : 2395-602X

Volume 9, Issue 6, November-December-2022

International Peer Reviewed, Open Access Journal
Bimonthly Publication

Published By

Technoscience Academy

	Rishith Singhagra, Dr. Andrew Haas	
84	**In-Situ Gel-New Formulation Trend** Azad Nabilal Dhage, Zinat Isak Mulla, Abhijeet Shashikant Kulkarni, Aniket Ramesh Borge, Mayur Krishnat Ghosalkar	665-675
85	**Active Safety System in Vehicles using Sensor Network Model** Ishan Kharat, Atharva Kulkarni, Dhaval Mahajan, Kartik Avhad, Sumit Jadhav	676-684
86	**Design and Analysis of Closed Loop PI Regulator for a Z-Source Inverter-Fuel Cell Applications** Nallaballe Viswanath, Dr.J Srinu Naick	685-692
87	**High Performance ALU design using Energy Efficient Borrow Select Subtractor** Kuruba Surendra, Sri. D. Purushotham Reddy	693-699
88	**A Comparative Study on the Performance of MGNREGA in Bihar and Jharkhand States** Manoj Kumar	700-707
89	**Role of Teachers in Developing Environmental Awareness Among Secondary School Students** Shyam Nandan Mishra, Prof. Phalachandra Bhandigadi	708-713
90	**Study On the Need for Effective Facility Management in Primary Schools in India** Setu Kumari, Prof. Phalachandra Bhandigadi	714-720
91	**Study of Microstrip Patch Antenna Using Planar Antenna Technologies** Dr. Reena Kumari, Prof. (Dr.) Mahesh Chandra Mishra	721-725
92	**Study of Schiff's Base Ligands by The Condensation of α-Amino Aceto Hydroxamic Acid with Diacti Monoxime** Dilip Kumar Ray, Dr. Arbind Kumar	726-729
93	**National Education Policy 2020 and Teaching System** Dr. Dinesh Kumar Yadav	730-733

International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

"राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 एवं शिक्षणप्रणाली"

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Volume 9, Issue 6
Page Number : 730-733

Publication Issue
November-December-2022

Article History
Accepted : 15 Nov 2022
Published : 22 Dec 2022

शोधलेख सारांश-

भारतवर्ष के मूल में उसकी अस्मिता, निष्ठा एवं कर्तव्य को पोषित, पल्लवित करने का श्रेय भारतीय शिक्षा को ही जाता है, जिसने ज्ञान के स्रोत के रूप में मानव का मार्ग सदा प्रशस्त किया है। समयानुकूल शिक्षा के उद्देश्य भी परिवर्तित होते हैं। वह शिक्षा आज **"सर्वांगीण विकास"** की सूत्रधार के रूप में हमारे समक्ष समुपस्थित है। विविध शिक्षण प्रणालियां आज शिक्षा को पुष्ट करने हेतु उपलब्ध हैं, जिनके आश्रयण से एक शिक्षक अपने कर्म पथ पर अग्रसर होता है।

आज आवश्यकता है शिक्षकों द्वारा समय की आवश्यकतानुसार समाज को सुदृढता देने वाले मूल्यवान नागरिकों के निर्माण में सक्षम शिक्षा प्रणालियों के आश्रयण की, जो बच्चों को उपयुक्त दिशा प्रदान कर सकें।

मुख्य शब्द - विद्या, ज्ञान, शिक्षा, सर्वांगीण विकास, शिक्षण, शिक्षण प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 ।

अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

भारतवर्ष के मूल में उसकी अस्मिता, निष्ठा एवं कर्तव्य को पोषित, पल्लवित करने का श्रेय यदि किसी उपादान को दिया जा सकता है, तो वह निश्चित रूप से भारतीय शिक्षा ही है, जिसने प्राचीन वांग्मय को परिभाषित करने के साथ ही इहलोक एवं पारलौकिक ज्ञान के स्रोत के रूप में मानव के प्राणीमात्र से एक सामाजिक मनुष्य बनने का मार्ग सदा सर्वदा प्रशस्त किया है। शिक्षा ज्ञान के स्थापन, विस्तार एवं विश्लेषण हेतु सबल माध्यम है। जीवनोपयोगी जानकारियों के साथ ही **आधुनिक युग की आवश्यकताओं की पूर्ति का सन्दर्भ भी कहीं न कहीं शिक्षा से ही जुड़ा है।**

शिक्षा-

विभिन्न कालों के परिदृश्य के आलोडन से यह ज्ञात होता है कि समयापेक्षा से शिक्षा के अर्थों व उद्देश्यों में आंशिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन काल में जो शिक्षा **"सा विद्या या विमुक्तये"** के अर्थों को पोषित करते हुए मुक्ति मार्ग के प्रमुख साधन के रूप में प्रयुक्त थी, उसने कालांतर में **"मनुष्य को जीवन जीने का सलीका सिखाने"** के रूप अपने उद्देश्यों में आंशिक परिवर्तन किया। आज के युग के दार्शनिकों, चिंतकों, मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों के विचारों के अध्ययनोपरांत यह

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

PRINT ISSN : 2395-6011
ONLINE ISSN : 2395-602X

INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC RESEARCH IN SCIENCE & TECHNOLOGY

Web Site : www.ijsrst.com Email : editor@ijsrst.com

International Journal of Scientific Research in Science and Technology

Print ISSN: 2395-6011 Online ISSN : 2395-602X

Volume 10, Issue 2, March-April-2023

International Peer Reviewed, Open Access Journal
Bimonthly Publication

Published By

Technoscience Academy

129	**Study of Cu (II) Complexes and Determination of Their Structure with The Schiff's Base Ligand** Dilip Kumar Ray, Dr. Arbind Kumar	971-977
130	**Inclusive education in the context of National Education Policy 2020** Dr. Dinesh Kumar Yadav	978-984

International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में समावेशी शिक्षा"

डॉ. दिनेश कुमार यादव
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ARTICLEINFO

Article History:
Accepted: 05 April 2023
Published: 28 April 2023

Publication Issue
Volume 10, Issue 2
March-April-2023
Page Number
978-984

शोध सारांश

इस वैविध्ययुक्त समाज में प्रत्येक शिक्षार्थी अपने आप में अद्वितीय है। विकास की प्रक्रिया में सभी को शामिल करने की जिम्मेदारी इस पथ में शामिल सभी हितधारकों पर निर्भर करती है। साथ ही इस क्षमता को हासिल करने की जिम्मेदारी समावेशी शिक्षा के रूप में इस देश की शिक्षा व्यवस्था के कंधों पर है। हालांकि समाज को समावेशी बनाने के लिए सदियों से वैश्विक स्तर पर कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन अभी भी ऐसी बाधाएं हैं जो इस लक्ष्य की प्राप्ति में अवरोध उत्पन्न करती हैं। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में समावेशी शिक्षा' शीर्षकान्वित इस शोधपत्र में समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए किए गए प्रयास सम्बद्ध बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

इस शिक्षा नीति में 6 E's- समानता (Equity), समान पहुंच (Equal Access), समान अवसर (Equal Opportunity), समान गरिमा (Equal Dignity), प्रभावी सम्प्रेषण (Effective Communication) संस्कृति को अपनाना (Embracing Culture) इत्यादि पर विशेष रूप से बल देकर सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने की रणनीतियां सुझाई गई हैं।

इनके साथ ही 5 R's- पहुँच (Reach), अधिकार (Right), उत्तरदायित्व (Responsibility), सम्बन्ध (Relationship), सम्मान (Respect) आदि के द्वारा शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित किया जा सकता है। इन दोनों विषयों पर विशेष बल देते हुए वास्तविकता में समावेशन को संभव बनाने हेतु पथ प्रदर्शित किया गया है।

सभी शिक्षार्थियों के विकास के लिए कक्षा को सुरक्षित स्थान बनाने हेतु शिक्षकों के सशक्तिकरण की सरकार की योजनाओं की भी चर्चा यहाँ की गई है।

मुख्य शब्द - समावेशी शिक्षा, NEP-2020, अधिकारिता, रणनीतियां।

उपोद्घात-

"The right kind of education is not concerned with any ideology, however much it may promise a future utopia: it is not based on any system, however carefully thought out, nor is it a means of conditioning the individual in some special manner. Education in the true sense is helping

Copyright: © 2023, the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शोधशौर्यम्

ISSN - 2581-6306

website : www.shisrrj.com

Peer Reviewed and Refereed
International
Scientific Research Journal

Editor-In-Chief : Dr. Raj Kumar

SHODHSHAURYAM
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED RESEARCH JOURNAL

Impact Factor : 7.239

Email: editor@shisrrj.com, shisrrj@gmail.com

शोधशौर्यम्

Shodhshauryam

International Scientific Refereed Research Journal

[Frequency: Bimonthly]

E-ISSN : 2581-6306

Volume 7, Issue 1, January-February-2024

Published By

Technoscience Academy

15	**वैश्विक स्वस्थ जीवन का पर्याय आयुर्वेदशास्त्र** डॉ. ऋतु शुक्ला	123-127
16	**माध्यमिक स्तर पर तकनीकी शैक्षणिक कौशल के क्रियान्वयन में चुनौतियों का अध्ययन** नेहा वर्मा, डा0 रमा शंकर	128-134
17	**आरण्यक कालीन समाज** गौतम आर्य	135-139
18	**किरातार्जुनीयम् एवं शिशुपालवधम् महाकाव्य में धर्म और राजनीति** मुकेश कुमार	140-144
19	**प्रणवचिन्तनेन ब्रह्मसाक्षात्कारस्य वर्णनम्** जसवन्त सिंह	145-147
20	**विद्याभारती संस्थया प्रसारितानां सांस्कृतिककार्यक्रमाणामध्ययनम्** निधीशभूषणपाठकः	148-154
21	**शास्त्र-रचना के सिद्धांत और 'समयसार'** प्रो. सुदीप कुमार जैन	155-159
22	**संस्कृतगद्यसाहित्ये अद्भुतकथानां तत्सम्बद्धसाहित्यानां विमर्शः** प्रदीपकुमारपाण्डेयः	160-164
23	**योगदर्शने अभिहितशैक्षिकतत्त्वानि** डॉ. दिनेशकुमारयादव	165-169

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN: 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

योगदर्शने अभिहितशैक्षिकतत्वानि

डॉ. दिनेशकुमारयादव
सहायकाचार्यः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय-संस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

Article Info

Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1

Page Number : 165-169

Article History
Received : 05 Jan 2024
Published : 17 Jan 2024

भारतीयचिन्तनपरम्परायाः षट्सु आस्तिकदर्शनेषु महर्षिपतञ्जलिप्रणीतं योगदर्शनम् अत्यन्तप्राचीनतमम्। मोक्षस्य कृते एव योगस्य उदयः सञ्जातः। "युज् समाधौ" इति धातोः योगशब्दस्य निष्पत्तिः। आत्मनः परमात्मनि विलय एव योग उच्यते। योगदर्शनस्यानुसारं योगस्य तात्पर्यं भवति - योगश्चितवृतिनिरोधः। अर्थात् चितवृतेः निरोधः योग इति कथ्यते ।

योगदर्शने शिक्षायाः अर्थः -

पतञ्जलिमतानुसारं शिक्षा एका दार्शनिकी तथा मनोवैज्ञानिकी प्रक्रिया भवति। एतत् योगस्य परिभाषायां लभ्यते यथा- अथ योगानुशासनम्, योगश्चितवृत्तिनिरोधः इति। योगसूत्रानुसारं शिक्षायाः अर्थो भवति उपदेशः। महाभाष्ये लिखितं वर्तते- शिक्षा एका एषा प्रक्रिया भवति यया मनुष्यः स्वस्य लौकिककर्म कर्तुं समर्थः तथा योग्यः भवति। संसारस्य ज्ञानात्मज्ञानप्राप्त्यर्थं श्रेष्ठसाधनं शिक्षा इति।

शिक्षोद्देश्यानि -

योगदर्शनानुसारं शिक्षायाः बहूनि उद्देश्यानि विद्यन्ते तेषु केषाञ्चन उद्देश्यानां विवरणं प्रस्तूयते । तद्यथा-

1. आत्मप्रशिक्षणम् आत्मनियन्त्रणञ्च।
2. नैतिकविकासः।
3. पूर्णताप्राप्तिः।
4. सामाजिकभावनायाः विकासः।
5. उपयुक्तसंस्काराणां निर्माणञ्च।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**